महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

हिन्दी विभाग की पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

Pl Th 12826
Pl Th 12826

शोध प्रबंध

नवगीत काव्य में जनवादी चेतना के स्वर एक अध्ययन

1-9-11

शोध छात्रा

कंचनकुमारी गिरीश

Guide: F.W.C.S.
Dr. O.P. Yadav 07-07-2011
Head
Department of Hindi,
Faculty of Arts
M. S. University of Baroda
BARODA.

F.W.C.S.
7-1-11
Dr. Shailja Bhardwaj
Head
Department Of Hindi
Faculty Of Arts.
The Maharaja Sayajirao University OF Baroda
VADODARA-390002

शोध निर्देशक

डॉ. ओ.पी. यादव

वरिष्ठ रीडर, हिन्दी विभाग,

म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा.

2010

संक्षिप्त रूपरेखा

नवगीत काव्य में जनवादी चेतना के रूप : एक अध्ययन

हिन्दी गीतों के प्रति मेरा रूझान बचपन से ही रहा है। मीरा, सूर, रसखान के ब्रजभाषा काव्य मुझे प्रारंभ से ही सम्मोहित करते रहे हैं। शिक्षार्थी जीवन में दिनकर और महादेवी के गीतों के प्रति मैं बहुत आकर्षित रही हूँ। बाद में हिन्दी के राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों के रेडियो प्रसारण तथा दूरदर्शन पर उनके प्रदर्शन भी देखती रही हूँ, बलवीर सिंह 'रंग', नीरज, रमानाथ अवस्थी, भारतभूषण, सोमठाकुर, उदयप्रताप सिंह, रामकुमार चंचल, बाबा नागार्जुन, भवानी प्रसाद मिश्र, शिवमंगलसिंह सुमन जैसे वरिष्ठ कवियों का काव्यपाठ मैंने सुना है और हर्ष विभोर हुई हूँ। इस तरह धीरे-धीरे मेरे मानस पटल पर हिन्दी गीतों की झंकृति के रागात्मक स्वर स्थान बनाने लगे। हिन्दी के अधुनातम गीतकारों को मैंने सुनना और पढ़ना प्रारंभ कर दिया था।

स्नातकोत्तर शिक्षण के बाद जब मैंने पीएच.डी. के विषय में मनस्थिति बनाई तब सर्वप्रथम हिन्दी नवगीतों के प्रति मेरा रूझान सामने आया। म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा

के वरिष्ठ रीडर डॉ. ओ.पी. यादव से इस संदर्भ में मैंने विचार विमर्श किया और उनकी आत्मीय एवं औपचारिक स्वीकृति के बाद पीएच.डी. हेतु मेरा विषय पंजीकृत हो गया।

नवगीतों के विषय में मेरी प्रारंभिक जिज्ञासा थी कि हिन्दी का समृद्ध लोकगीत साहित्य आधुनिक नवगीतों की विकास यात्रा में कहाँ ठहरता है? फिर विचार यह भी प्रस्तुत हुआ कि हिन्दी गीत यात्रा में जनवादी गीतों का शिल्प एवं वर्ण्य हिन्दी के नवगीतों से कितना भिन्न और समान है तथा जनवादी गीतों की मूल संचेतना में और नवगीतों के वैचारिक–पटल में कितना अन्तराल है। बहुत कुछ सोच–समझ के बाद मैंने नवगीतों की विकास यात्रा में जनवादी गीतों की महत्वपूर्ण भूमिका की प्रभावान्विति को ध्यान में रखकर हिन्दी के नवगीत और जनवादी गीतों के विषय अध्ययन पर अपना शोध विषय केन्द्रित किया।

उस दरम्यान अनेक जनवादी गीतकारों एवं नवगीतकारों के संग्रह मुझे उपलब्ध हुए और मैंने उनका अध्ययन–मनन प्रारंभ कर दिया।

रमेश रंजक, शांति सुमन, शंकर द्विवेदी, देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', शम्भुनाथ सिंह, रवीन्द्र भ्रमर, कुमार रवीन्द्र, विष्णु विराट, नचिकेता, विद्यानन्दन राजीव, सोमठाकुर, किशन सरोज, अनूप अशेष, महेश अनघ, माहेश्वर तिवारी, राजेन्द्र गौतम, सुरेश गौतम, महेन्द्र नेह, किशोर काबरा, यश मालवीय जैसे स्थापित और वरिष्ठ गीत हस्ताक्षरों का रचना संसार मेरे सामने आया। हिन्दी गीत संरचना के बदलते स्वर मैंने समझे और गीतों की रागात्मक स्वर लहरियों में आधुनिक समय की पदचाप भी मैंने सुनी।

अपनी अध्ययन–यात्रा में हिन्दी के लोकगीतों का वृत्त जानते हुए हिन्दी के जनवादी–गीतों के मिज़ाज को परखा है, जनवाद की सोच के प्रस्तार में आधुनिक हिन्दी नवगीतों की पृथक् सत्ता को भी विस्तार से जाना समझा है। इस संदर्भ में प्रतिनिधि गीत हस्ताक्षरों की रचनाओं को समीक्षित एवं विवेचित भी किया है।

गुजरात एक समृद्ध विकसित विचारवान राज्य है और बड़ौदा एक सांस्कृति सुरुचिपूर्ण नगरी के विशेषण से प्रख्यात है, यहाँ बड़े ही समृद्ध हिन्दी के कवि सम्मेलन, संगोष्ठियाँ तथा साहित्यिक सभाएँ संयोजित होती रहती हैं। संयोग और सद्भाग्य से यहीं के हिन्दी विभाग के तत्कालीन विभागाध्यक्ष डॉ. विष्णु विराट के माध्यम से मेरा साक्षात्कार श्री सोमठाकुर, माहेश्वर तिवारी, यश मालवीय, किशन सरोज, शिवओम अम्बर, उदय प्रताप सिंह जैसे वरिष्ठ कवियों से हुआ और मेरे मार्ग दर्शन डॉ. ओ.पी. यादव के सहयोग से मुझे अनेक महत्वपूर्ण गीत संग्रह भी प्राप्त हुए। मैंने डॉ. ओ.पी. यादव के वरिष्ठ निर्देशन में अपना शोध कार्य प्रारंभ कर दिया, जो अब सम्पन्न हो गया है।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने 'नवगीत काव्य में जनवादी चेतना के स्वर : एक अध्ययन' विषयक अपने शोध प्रबंध को सात अध्यायों में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय में हिन्दी नवगीतों की पहचान और उसकी क्रमिक विकास–यात्रा को रेखांकित करते हुए इसके प्रमुख पड़ावों को विवेचित किया गया है।

द्वितीय अध्याय में नवगीतों की पृष्ठभूमि का अध्ययन करते हुए लोकगीतों और

जनवादी संचेतना के विविध आयामों को स्पष्ट किया गया है।

तृतीय अध्याय में नवगीतों में आम–आदमी की उपस्थिति तथा आम आदमी की दैनंदिनी के सीधे जुड़ाव को विश्लेषित किया गया है। इसमें भारतीय मध्य वर्गीय, निम्न मध्यवर्गीय तथा निम्न वर्गीय परिवारों की शोषित और दमित अवस्था का चित्रण करते हुए नवगीतों की पृष्ठभूमि को स्पष्ट किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में जनवाद की सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति स्पष्ट करते हुए हिन्दी काव्य में जनवाद की सन्निहिति को विवेचित किया गया है।

पंचम अध्याय में हिन्दी नवगीतों में जनवादी संचेतना के विविध रूपों को व्याख्यायित करते हुए नवगीतों के वर्ण्य विस्तार की परिसीमाएँ निश्चित की गई हैं तथा विवेच्य विषय के अन्तर्गत जनवादी सोच के प्रस्तार तय किए गए हैं।

षष्ठ अध्याय में हिन्दी के नवगीतों में जनवादी सोच और चिन्तन के संवेगों को स्पष्ट करते हुए जनवादी चेतना के संस्पर्शों की साहित्यिक समीक्षा भी प्रस्तुत की गई हैं।

सप्तम अध्याय में समग्र शोध ग्रंथ का सिंहावलोकन करते हुए शोध की मौलिक स्थापनाओं तथा महत्ताओं को रेखांकित करते हुए प्रस्तुत अध्ययन का मूल्यांकन तथा उपसंहार प्रस्तुत किया गया है।

इस ग्रंथ–प्रणयन एवं शोध–सम्पादन में मेरे शोध निर्देशक डॉ. ओ.पी. यादव का वरद मार्गदर्शन सर्वोपरि उपादेय रहा है। मैं उन्हें सादर नमन करती हुई उनके प्रति अपना हृदयस्थ आभार व्यक्त करती हूँ। इसके साथ हिन्दी विभाग के समग्र अध्यापकों के सहयोग एवं सार्थक संवादों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

इस शोध–यात्रा में अत्यन्त सहयोगी भूमिका का निर्वाह करनेवाले मेरे पति श्री कैलाशकुमार राय की मैं अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे सतत प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरा यह महत्वपूर्ण कार्य संपन्न होने में सहयोग प्रदान किया है, इसके साथ ही माँ कौशल्या देवी एवं पिता श्री गिरीश सिंह तथा सासु गीता देवी, भाई धर्मेन्द्र, राजेश, सोनू, बेटा आकाश एवं बेटी अंकिता ने भी हर तरह का सहयोग देकर मेरे इस कार्य को अग्रसर होने में सहायता प्रदान की है। इसके अतिरिक्त जिनका भी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मुझे सहयोग प्राप्त हुआ है उन सबके प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

कंचन कुमारी गिरीश

HANSA MEHTA LIBRARY